REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

दलित उत्पीड़न: एक एतिहासिक अध्ययन

डॉ. छोटेलाल पासवान

प्रस्तावना :

दलित शब्द वर्तमान परिवेश में एक राजनीतिक एवं आधुनिक शब्द है | इसका प्रयोग लगभग सौ वर्ष पूर्व से ही होता आ रहा है और तभी से ही इसकी व्याप्ति लेकर विद्वानों में मतभेद रहा है | इसका आशय है कि दलित शब्द आधुनिक एवं राजनीतिक है, किन्तु दलितपन अत्यंत प्राचीन है| इसकी उत्पति संस्कृत के "दल" धातु से हुई है| जिसका अर्थ तोड़ना टुकड़े करना तथा कुचलना है-भत्ते भकुंभ दलेन भुवि सचि शूरा: | संस्कृत शब्द कोष के अनुसार दलित दलित दल+त्त टूटा हुआ, पिसा हुआ, फ़ैला हुआ, तथा खुला रहा है- दलित हृदय गोढोदेंग द्विघ | तुल विछते| हिन्दी अँग्रेजी शब्द कोष के अनुसार दलित शब्द का अर्थ विनष्ट किया हुआ हैं| इसका मानक अर्थ दबाना, नीचा करना, दिल तोड़ना आदि है | तथा दलित वर्ग का अर्थ नीची जातियों के लोग अछुत हरिजन, पिड़ित, दवाएं गये| दलित, कुचले सताये हुए दिये गये हैं| ऑक्स फ़ोर्ड डिक्शनरी के अनुसार दलित का अर्थ "डिप्रेस्ड" प्राय: नीची जातियों के अछुत वर्ग किया है, इस तरह दलित अत्यंत ही प्राचीन एवं प्रासंगिक है|

प्रंसगानुसार दलित उत्पीड़न का अर्थ ही तरहतरह से सताए तथा कुचले गये लोगों पर अत्याचार है | ये हरिजन, अति पिछड़े जाति के लोग है, जिन्हें उच्च वर्गीय इन्हे हीन और अछूत समझते है| आजादी के इतने वर्षों के बाद भी डोम और हलखो से आज भी यहॉ अर्थात बिहार के लोग छुआते है | आज भी ये वर्ग सिर पर पाखाना ढोते है, डोम जूठा उठाते है, चमार आज भी मवेशी के खाल उतारते है, जो दासता युग की याद ताजा करती है| आज भी कुछ मुठ्ठी भर लोगों को भोजन और पानी छुआता है| कुछ अति-पिछड़ी जातियों, जुलाहा, तत्मा, कहार और तजी से आज भी कुछ लोग छुआ-छुत मानते हैं| इन हरिजनों और पिछड़ी जातियों का बड़ा हिस्सा आज भी अपने दरवाजे पर ऊँची जाति और सवर्णों के सामने खटिया, बेंच तथा कुर्सी पर नहीं बैठ सकते | यद्यपि आज की बदली परिस्थिति में थोड़ा बहुत परिवर्तन हुआ है, पर अभी समय लगेगा | ये दलित वर्ग आज भी इन सवर्णों के कुओं या चापाकल पर पानी डर से नही भरते क्योंकि यहॉ छुआ-छुत की विमारी जो है | उनके मंदिरों मेम प्रवेश वर्जित है जब कि दोनों हिन्दू है दोनों के देवी-देवता एक हैं | अकलियत का एक बहुत बड़ा तबका भी इन्हीं के साथ है | यहॉ हिन्दू धर्म में जब कि पेड़पौधें की पूजा होती है |पश-पक्षी पुजे जाते हैं| इनमें देवताओं का वास समझा जाता है| जमीन से उनको महावीर प्रसाद महात्माबुद्ध ने सामाजिक भेद भाव छुआछत और अत्याचार के खिलाफ़ अभियान चलाया | बुद्ध ने कहा- मनुष्य को उसके अर्थात वर्ण से नहीं बल्कि जीवन में उसके क्रिया-क्लापोम से परख की जानी चाहिए | अच्छे चरित्र वाला तथा कर्मवाला मनुष्य उच्च होता है, ओछे चरित्र एवं कर्मवाला मनुष्य नीच होता है| उन्होंने दलितों यहाँ तक कि पशुओं के साथ की जाने वाली हिंसा का विरोध करते हुए अहिंसा पर्सो धर्मो को अपना मूलमंत्र बनाया| मध्यकाल में नानक, कबीर, दाधू रैदास, चैतन्य, नामदेव और तुकाराम आदि संतों ने सामंतवाद के अन्तर्गत जातिवादी और धार्मिक भेदभाव एवं अलगाव के खिलाफ़ शिक्षा देते हुए नीची जातियों को जगाएगा | उनमें समंतवादी विरोधी संघर्षो के जिए फूँकते हुए शिक्षा दी-जात-पात पूछे नही कोई |
हरि को भजै सो हरि को होई |

इस प्रकार कबीर में हिन्दू-मुस्लिम दोनों के वाहयाडम्बर, रुढिवाद से कर्मकाण्ड की जमकर आलोचना की वर्तमान काल में बहुत बड़े-बड़े महापुरुषों का अवतरण हुआ, जिन्होनें तमाया सामंती उत्पीड़न सती प्रथा नारी उत्पीड़न मूर्ति पूजा और वहुदेववाद आदि के खिलाफ़ सौ वर्षों तक देश के एक छोर से दूसरे छोर तक अभियान चलाया| पश्चिम बंगाल में पेरियार ने सामाजिक बिद्रपताओं के खिलाफ़ आन्दोलन किया | इसी तरह गॉधी तथा अम्बेडकर ने इसके विरुद्ध जोरदार आवाज उठाई| सुधारवादियों ने सहभोज करवाए अर्न्तजातीय विवाह को शुरु किया उत्पीड़न से मुक्ति के लिए कितने दलितों ने धर्म परिवर्तन किए, कितने हरिजन मुसलमान हो गए, कितने आदिवासी तथा इसाई हो गए कितने हरिजन बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिए लेकिन दलित आखिर दलित ही रहे, जिन पर क्रमश: उत्पीड़न होता रहा |

भारतीय राजनीति में अपने शासन को कायम रखने के लिए अँग्रेजों ने1857 के बाद डालों शासन करो की नीति को अपनाया | सर्वप्रथम हिन्दू-मुसलमान के बीच फ़ूट डाले गए पुन: अछूतों दलितों को हिन्दुओं से अलग निर्वाचन क्षेत्र तथा अलग प्रति निदित्व की व्यवस्था करना था | गॉधी जी ने इस विभाजनकारी नीति का विरोध करते हुए कहा-केवल काँग्रेस ही संपूर्ण भारत का और सार्वजनिक हितों का प्रतिनिधित्व करता हैं इसके बावजूद भी ब्रिटिश प्रधान मंत्री रेमजे मैक्डोना एण्ड ने7 अगस्त 1932 को अपना निर्णय सुनाते हुए न सिर्फ़ मुसलमान के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्रों और अन्य सुरक्षाओं का भरपूर सहयोग दियाबल्कि दलित वर्ग को पृथक इकाई भी करार दिया और लेजिस्लेटरों में उनके लिए एक निश्चित प्रतिशत सी है सुरक्षित की थी, जिसके खिलाफ़ में महात्मा गॉधी आमरण अनशन पर बैठ गये | अंत में पुन गॉधी जी को बुलाकर समझौता किया गया, तब जाकर द्लित वर्ग सामन्य चुवान क्षेत्र के प्रमुक अंग बन गए उन्हें अधिकार दिया गय कि हिन्दू कोटे में से अपने लिए सुरक्षित सीटों केलिए वे निर्वाचन मण्डलों द्वारा सदस्य चुन सके 1930 से 34 मे भारतीय जनता सामाज्यवाद के खिलाफ़ अठरखड़ी हुई थी | ये साम्राज्य वाद हिन्दू, मुस्लिम तथा अछूतों (दलितों) को आपस में लड़ाकर मुक्ति आन्दोलन के बन्द करना चाहता था |भारतीय पूंजिपति वर्ग साम्राज्य वाद के साथ समझौता का रास्ता अपनाया | पूना पैक्ट साम्राज्यवाद और भारतीय पूंजीपति वर्ग के साथ अछूत समस्या का असली समधान नही यह एक्क समझौता थी | गॉधी जी अनान्दोलन को बीच में ही छोड़कर तथा कथित अछतोद्वार के रचनात्मक कार्य में लग गए| बिहार पूंजी वादी जमींदार सरकार ने बिना सामंतवाद को आहत किए अछुत समस्या हल करने का प्रयास किया | संविधान में समानता का अधिकार दिया गया अस्पृश्यता को गैर कानूनी माना गया| दलित उत्पीड़न विरोधी कानून बनाया गया | दलितों को संसद सभाओं और सरकारी सेवाओं में आरक्षण देकर अन्य आर्थिक सुविधाएँ भी प्रदान की गईं इन सभी सुविधाओं के बाद बिहार के दलतों में जागृति आई उनका स्वाभिमान जगा और वे इज्जत तथा बराबरी का हक मॉगने लगे | उँची और सवर्ण जाति के लोग इसे अपनी शान और आन बान के लिखा समझने लगे | उन्हें मजदूरी, जमीन मर्यादा के बदले दवाकर रखना पसंद करते थे, तथा कलित पुराने ढंग से जीना नही चाहते थे| स्वभावत: यथास्थितिवादी और अपरिवर्तनवादी प्रवृति के बीच रख रखाव की शुरूआत होती है, जो धमकी गाली-गलौज मारपीट, हिंसा के लिए प्रतिक्रियावादी लेखिक सेना, कुंवर सेना का गठन होता है | ये कभी चंदवा, रुपसपुर, बेलछी, पारस विगहा | तो कभी शंकर बिगहा, कभी निखरैल तो कभी नारायणपुर जैसे सामूहिक नरसंहारों को अंजाम देते हैं बिहार में 1971 से 2000 तक सामंतों और उनकी सेनाओं के द्वारा सैकड़ों काण्डों में हजारों कलितों के सामुहिक नर संहार किए गये इसी प्रतिशोध में वामपंथी उग्रवादी संगठन जैसे पीर्य युनिट्री पीपुल्स वार ग्रूप् एम0सी0सी0 अब तक कितने सामूहि नरसंहार किए| यहाँ सामंती नेताओं और दलित, पिछड़े मारे गए, जो गरीब है | लेकिन वामपंथी उग्रवादी संगठनों ने उँची जाति के बहुत से निर्दोष गरीबों की भी हत्याएँ की दलितों पर दमन और उतपीड़न और तीखा हो जाता है | इन भयानक नरसंहारों के बाद मुख्यमंत्री और अधिकारी घटनास्थल पर दौड़ा करते है घड़ियाली आंसू बहाते है आर्थिक राहतें तथा मुआवजें की घोषणा कर अपना पिण्ड छुड़ा लेते हैं| स्थिति कुछ दिन शान्त रहती है, पुन: इन सामंतों द्वारा पुरानी हरकत करते हुए नरसंहार का सिलसिला जारी रखते है

सामंती पूंजीवादी सरकार दलित उतपीड़न की इन घटनाओं को कानून और व्यवस्थाको समस्या समझती है | इन दलितों को किसी ने हरिजन कहा, तो किसी ने अन्त्यज, सेना उन्हें उँची जाति और ब्राह्मण किसी दलित सेना उन्हें उँची जाति और ब्राह्मणवाद के खिलाफ़ उमारा | सत्ता की ऊँची कुर्सियों दी, लेकिन वे दलितों के अत्याचार से मुक्ति नही दे सके| उन्हें न तो जमीन दिला सके और न ही न्यूनतम मजदूरी मिल सका| मान-सम्मान तो दूर जाति को जाति के ही बीच उभार पैदा किया, ताकि आपस में ही लड़कर मरें | बिहार में पुँजीवादी पार्टियों जाति, धर्म और सम्प्रदाय शोषित पीड़ित जनता को आपस में लड़ाकर अपने वर्गीय शासन को मजबूत करने केलिए इस्तेमाल करती रहि है |

यद्यपि दलित समस्या सिर्फ़ सामाजिक नही है | आज यह आर्थिक और वर्गीय समस्या है, अत: इसका समाधान इसके वर्गीय चरित्र में उदभव और विकास में ढूँढना होगा| पाश्चालय धारणा के अनुसार प्राचीन काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय और कालान्तर में उन्हें शूद्र कहा | बाद में उन पर ऊँ नीच, छुआ छूत जैसे अमानुषिक निर्योग्यताएँ थोंपते हुए अछूत दलित की श्रेणी में ला खड़ा किया है

संदर्भ सूची:-

1. भार्तृहरि शतकम् 1.59
2. संस्कृत शब्दकोष बी0एस0 आप्टे-पृ0 108
3. दलित समस्या जड़ में कौन-इन्तिजार नैइम साहित्य सौरभ 1781 नई दिल्ली पृ0 90
4. दलितों के रुपान्तरण की प्रक्रिया-नरेन्द्र सिंह पृ0 67
5. बिहार एक परिचय इम्तेयाज अहमद नेशनल पब्लिशिंग् खजांची रोड पटना-4
6. महात्मा बुद्ध का संदेश
7. कबीरदास बीजक 1931 की जनगणना प्रतिवेदन के अनुसार
8. बिहार एक परिचय वही

LBP PUBLICATION